इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (छ.ग.)

हिन्दी साहित्य

पी-एच.डी. प्रवेश परीक्षा पाठ्यक्रम सत्र– 2013

1	हिन्दी भाषा और उसका विकास	• अपभ्रंश (अवहट्ट सहित) और पुरानी हिन्दी का सम्बन्ध। काव्यभाषा के रूप में अवधी, ब्रजभाषा और साहित्यिक हिन्दी के रूप में खड़ी बोली का उदय और विकास। • मानक हिन्दी भाषा का वैज्ञानिक विवरण (रूपगत)। हिन्दी की बोलियाँ – वर्गीकरण तथा क्षेत्र। नागरी लिपि का विकास और उसका मानकीकरण। • हिन्दी भाषा के प्रयोग के विविध रूप– बोली, मानकभाषा, सम्पर्कभाषा, राजभाषा और राष्ट्रभाषा। संचार माध्यम और हिन्दी।
2	हिन्दी साहित्य का इतिहास	• हिन्दी साहित्य का इतिहास–दर्शन। इतिहास–लेखन की पद्धतियाँ। हिन्दी साहित्य के प्रमुख इतिहास ग्रन्थ। हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल–विभाजन और नामकरण। • आदिकाल का आरम्भ। आदिकालीन हिन्दी का जैन, सिद्ध और नाथ साहित्य, अमीर खुसरो की हिन्दी कविता, विद्यापति की पदावली, आरम्भिक गद्य तथा लौकिक साहित्य। • पूर्वमध्यकाल/भक्तिकाल में भक्ति–आन्दोलन। प्रमुख निर्गुण एवं सगुण सम्प्रदाय। वैष्णव भक्ति की सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि। आलवार सन्त। भक्ति आन्दोलन का अखिल भारतीय स्वरूप और उसका अन्तःप्रादेशिक वैशिष्ट्य। हिन्दी के सन्त काव्य का वैचारिक आधार। प्रमुख निर्गुण सन्त कवि। सन्त काव्य की प्रमुख विशेषताएँ। भारतीय धर्म साधना में सन्त कवियों का स्थान। हिन्दी के सूफी काव्य का वैचारिक आधार। प्रमुख सूफी कवि। सूफी प्रेमाख्यानकों का स्वरूप। हिन्दी सूफी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ। हिन्दी के कृष्ण भक्ति काव्य के विविध सम्प्रदाय। अष्टछाप। प्रमुख कृष्ण–भक्त कवि और काव्य। भ्रमरगीत परम्परा। गीति परम्परा और हिन्दी कृष्ण काव्य। कृष्ण भक्ति काव्य की प्रमुख विशेषताएँ। हिन्दी के राम भक्ति काव्य के विविध सम्प्रदाय। प्रमुख कवि और काव्य। तुलसीदास की प्रमुख कृतियाँ व उनका महत्व। रामभक्ति काव्य की प्रमुख विशेषताएँ। • उत्तरमध्यकाल/रीतिकाल का सामाजिक–सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य। रीतिकालीन काव्य के मूल स्रोत। प्रमुख प्रवृतियाँ। रीतिकालीन कवियों का आचार्यत्व। रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध व रीतिमुक्त काव्यधारा। रीतिकाल के प्रमुख कवि। • आधुनिक काल के हिन्दी काव्य की पृष्ठभूमि। भारतेन्दु युगीन/पुनर्जागरणकालीन हिन्दी काव्य। द्विवेदीयुगीन/जागरण सुधारकालीन हिन्दी काव्य। छायावादी हिन्दी कविता। छायावादोत्तर हिन्दी कविता : प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता व समकालीन कविता। आधुनिक हिन्दी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ और प्रमुख कवि। • आधुनिक काल में हिन्दी गद्य का उद्भव और विकास। भारतेन्दु, पूर्व हिन्दी गद्य। 1857 की राष्ट्रीय क्रान्ति और सांस्कृतिक पुनर्जागरण। भारतेन्दु और उनका मण्डल। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध की हिन्दी पत्रकारिता। • हिन्दी साहित्य की विविध गद्य विधाएँ– हिन्दी उपन्यास : प्रेमचन्द पूर्व उपन्यास, प्रेमचन्द का युग, प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास, स्वरूप और विशेषताएँ। हिन्दी कहानी : बीसवीं सदी की हिन्दी कहानी और प्रमुख कहानी आन्दोलन, स्वरूप और विशेषताएँ। हिन्दी नाटक : हिन्दी नाटक और हिन्दी रंगमंच, विकास के चरण और स्वरूपगत वैशिष्ट्य। हिन्दी एकांकी : एकांकी का उद्भव, विकास एवं वैशिष्ट्य। हिन्दी निबन्ध : हिन्दी निबन्ध के प्रकार और स्वरूपगत वैशिष्ट्य। हिन्दी आलोचना : हिन्दी आलोचना का विकास, स्वरूप और भेद। अन्य गद्य विधाएँ : रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा–साहित्य, आत्मकथा, जीवनी और रिपोर्ताज।

3	काव्यशास्त्र के सिद्धान्त	भारतीय काव्यशास्त्र : • काव्य लक्षण, काव्य–हेतु और काव्य–प्रयोजन। भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धांत– रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति और औचित्य का सामान्य परिचय। • भरत मुनि का रससूत्र और उसके प्रमुख व्याख्याकार। रस के अवयव। साधारणीकरण। शब्द शक्तियाँ और ध्वनि का स्वरूप। • अलंकार– यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, संदेह, भ्रान्तिमान, अतिशयोक्ति, अन्योक्ति, समासोक्ति, अत्युक्ति, विशेषोक्ति, दृष्टान्त, उदाहरण, प्रतिवस्तूपमा, निदर्शना, अर्थान्तरन्यास, विभावना, असंगति तथा विरोधाभास। • रीति, गुण, दोष। • मिथक, फन्तासी, कल्पना, प्रतीक और बिम्ब। पाश्चात्य काव्यशास्त्र : • प्लेटो और अरस्तू का अनुकरण सिद्धान्त तथा अरस्तू का विरेचन सिद्धान्त। वड्र्सवर्थ का भाषा सिद्धान्त। कालरिज की कल्पना और फैन्टेसी। लोंजाइनस का काव्य में उदात्त तत्व। क्रोचे का अभिव्यंजनावाद। आई.ए. रिचर्ड्स का संप्रेषण सिद्धान्त। टी.एस. इलियट की निर्वैयक्तिकता, वस्तुनिष्ठता एवं परम्परा की अवधारणा। रूसो का रूपवाद और नयी समीक्षा ।
4	हिन्दी काव्य : रचनागत वैशिष्ट्य और प्रमुख रचनाकार	• भक्ति काव्य की पूर्व–पीठिका/आदिकालीन हिन्दी काव्य। सिद्ध–जैन–नाथ साहित्य। विद्यापति, अमीर खुसरो। • भक्ति काव्य का स्वरूप, भेद, निर्गुण–सगुण का सम्बन्ध, साम्य और वैषम्य। कबीर, जायसी, सूरदास, तुलसीदास। • रीतिकाव्य की सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टि, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, विविध काव्य धाराएँ। केशव, बिहारी, भूषण, घनानंद। • आधुनिकता : अवधारणा और उसके उदय की पृष्ठभूमि। हिन्दी पुनर्जागरण। भारतेन्दु, महावीर प्रसाद द्विवेदी, हरिऔध, मैथिलीशरण गुप्त। • छायावाद : सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टि। वैचारिक पृष्ठभूमि। स्वाधीनता की चेतना। गाँधी का प्रभाव। प्रमुख अन्तर्धाराएँ। [illegible] प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी। राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा : माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्राकुमारी चौहान। • छायावादोत्तर हिन्दी कविता की वैचारिक पृष्ठभूमि : मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, अवधारणा व प्रवृत्तियाँ। प्रगतिवाद : नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल। प्रयोगवाद : अज्ञेय। नयी कविता : मुक्तिबोध। समकालीन कविता : रघुवीर सहाय, कुँवर नारायण।

5	हिन्दी गद्य : रचनागत वैशिष्ट्य और रचनाएँ	• उपन्यास : गल्प और इतिहास, कल्पना और यथार्थ, कथा और मनोजगत। प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास – परीक्षा गुरु। प्रेमचन्द युगीन उपन्यास– गोदान। प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास–शेखर एक जीवनी, भाग– 1। • कहानी और प्रमुख कहानीकार : प्रेमचन्द और प्रसाद की कहानी कला– ईदगाह, आकाश दीप। प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कहानी और नयी कहानी की संवेदना और शिल्प– लाल पान की बेगम, इनाम, गदल। • नाटक : हिन्दी नाटक और भारतेन्दु, यथार्थ बोध, राष्ट्रीयता व सामाजिकता का विशेष परिप्रेक्ष्य– भारत दुर्दशा, अंधेर नगरी। प्रसाद के नाटक, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना एवं नाट्य–शिल्प के संदर्भ में चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी। प्रसादोत्तर नाटक, आधुनिकता बोध, प्रयोगधर्मिता व नाट्य–भाषा के संदर्भ में अंधायुग, आधे–अधूरे। • एकांकी : प्रारम्भिक, स्वातन्त्र्यपूर्व व स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी एकांकी – एक घूँट, दीपदान तथा मम्मी ठकुराइन का वस्तुगत व शिल्पगत वैशिष्ट्य। • निबन्ध : प्रमुख निबन्धों की अन्तर्वस्तु और शिल्प – भारतेन्दुयुगीन बालकृष्ण भट्ट कृत 'बालविवाह'। द्विवेदीयुगीन सरदार पूर्णसिंह कृत 'मजदूरी और प्रेम'। शुक्लयुगीन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का 'क्रोध''। शुक्लोत्तरयुगीन आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का 'अशोक के फूल' व कुबेरनाथ राय का 'प्रिया नीलकण्ठी'।
6	आलोचना : आलोचना, शैली और आलोचक विचारधारा	• प्रारम्भिक हिन्दी आलोचना : भारतेन्दु हरिशचन्द्र कृत 'नाटक' शीर्षक रचना का परिप्रेक्ष्य। श्यामसुन्दर दास की शोधपरक एवं महावीर प्रसाद द्विवेदी की परिचयात्मक आलोचना–दृष्टि। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की रस दृष्टि और लोकमंगल की अवधारणा। आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी की सौष्ठववादी आलोचना–दृष्टि। आधुनिक आलोचना दृष्टि : अज्ञेय, नामवर सिंह और नगेन्द्र की समीक्षात्मक रचनाओं का परिप्रेक्ष्य। समसामयिक आलोचना : प्रमुखतः नाट्य विधागत परिप्रेक्ष्य में डॉ. नेमिचन्द्र जैन की समीक्षा–दृष्टि। • पाश्चात्य आलोचना का परिप्रेक्ष्य : स्वच्छन्दतावाद और यथार्थवाद, संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद। आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता। समकालीन आलोचना की कतिपय अवधारणाएँ : विडम्बना (आयरनी), अजनबीपन (एलियनेशन), विसंगति (एब्सर्ड), अन्तर्विरोध (पैराडॉक्स), विखण्डन (डिकन्स्ट्रक्शन)।

प्रमुख शोध विभाग
इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय
खैरागढ़ (छ.ग.) 491-881

(यू.जी.सी. की नेट परीक्षा के हिन्दी विषय के पाठ्यक्रम का संक्षिप्त रूप)

(प्रो. मृदुला शुक्ल)
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष
हिन्दी विभाग

(डॉ. राजन यादव)
सह. प्राध्यापक
हिन्दी विभाग

(डॉ. देवमाईत मिंज)
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग

परीक्षण किया
14-11-14.